चौदहवाँ पटल : तारा-कल्प की अङ्गभूत सिद्धियाँ

श्रीदेवी ने कहा—हे महा-देव ! त्रैलोक्य-तारिणी तारा किस प्रकार सिद्धि प्रदान करती हैं ? श्रीमहा-दक्षिणा काली हमें क्या सिद्धि देती हैं ? यह सब मुझे बताइए।

श्रीशिव ने कहा—यह अति रहस्यमय विषय बताता हूँ, सुनो। 'मधुमती' नाम की सिद्धि तुम्हारी आज्ञा से उत्पन्न हुई। तुम्हारे सान्निध्य से काली-तारा-मय धाम हुआ है। उक्त 'मधु-मती सिद्धि' को श्रीविद्या ने मुख दिया, काली ने दोनों हाथ, तारा ने अँगुलियाँ और भुवनेशी ने हृदय-कमल। छिन्ना ने उसे दोनों चरण, मातङ्गी ने दोनों नेत्र, लक्ष्मी ने ललाट, सिद्ध-विद्या ने केश और ब्रह्मास्त्र-विद्या (बगला) ने दोनों गुल्फ प्रदान किए। बाला ने मुख की मुस्कान और अश्व दिया। श्री ने रुचि और धूमावती ने निग्रह-शक्ति प्रदान की। इस प्रकार सब देवों के अंश से तेजो-राशि से उत्पन्न हुई 'महा-मधुमती' त्रैलोक्य का आकर्षण करनेवाली परा-सिद्धि-शक्ति है। पार्वती, अरुन्धती, दुर्गा, मृत-संजीवनी और परा शक्तियाँ सबका आकर्षण उसके द्वारा करती हैं। काली-तारा-मय धाम में उसका आविर्भाव हुआ। वह 'पायस' (खीर) से परम सन्तुष्ट होती है। यह 'महा-मधुमती' विद्या भैरव, वेताल, किन्नर, देवादि का आकर्षण करती है। त्रैलोक्य का आकर्षण करनेवाले उसके मन्त्र को बताता हूँ।

'प'-वर्ग का पाँचवाँ='म' पावक (अग्नि)—'र' से युक्त, नाद-विन्दु—'ँ' से विभूषित और महा-काम-कला—'ई' से युक्त होकर एकाक्षरी कला, '**म्रीं**' कही गई है।

म्रीं मधु-मतीं स्थावर-जङ्गमाकर्षणीं ठः ठः स्वाहा (१८)

यह त्रैलोक्य का आकर्षण करनेवाली अठारह अक्षरों की परा-विद्या है। इसके ऋषि कामदेव, छन्द निवृद्-गायत्री, देवता मधु-मती, बीज म्रीं, शक्ति स्वाहा और विनियोग स्थावर-जङ्गमाकर्षण के लिए कहा है। बीज को षड्-दीर्घ कर अर्थात् 'म्रां म्रीं म्रूं म्रैं म्रौं म्रः' से क्रमशः कर और षडङ्ग न्यास करे। ध्यान निम्न प्रकार करे—

गौरांगीं शरदिन्दु-सुन्दर-मुखीं पीतांशुकां पीवराम्,
प्रोत्तुङ्ग-स्तन-मण्डल-प्रविलसज्जाम्बू-नदैकावलीम्।
श्वेतोत्तुङ्ग-तुरङ्गगां त्रि-नयनां पीताङ्ग-राग-स्रजाम्,
ध्यायेत् पायस-लालसां मधुमतीं दोर्भ्यां दधानां सृणिं॥

गौर-वर्णा, शरद्-कालीन चन्द्र के समान सुन्दर मुखवाली, पीली साड़ी पहने, पुष्ट एवं उन्नत पयोधरा, श्वेत-वर्ण अश्व पर आसीना, त्रि-नेत्रा, पीले पुष्पों की माला धारण करनेवाली, खीर-लुब्धा मधु-मती देवी को दोनों हाथों में खड्ग लिए ध्यान करे।

भगवती काली के पूजन-विधान के अनुसार दिग्-बन्ध, भूतशुद्धि आदि कर्म करे। इस देवता के सम्बन्ध में यन्त्रावरण-पूजा की विधि नहीं है। केवल पूजन करे। सारी विधि त्रि-शक्तियों की पूजा के समान है। विशेष यह है कि उक्त प्रकार ध्यान कर सर्वाकर्षण-कारिणी विद्या के पुरश्चरण की सिद्धि के लिए उसका सत्तर हजार जप करे। मन्त्र के सिद्ध होने पर सिद्ध चर्या करे। यथा—

एक वर्ष तक केले के वन में रहता हुआ पायसान्न खाकर निरन्तर मन्त्र का जप करे। तब वीर-साधन के अनुसार एक लाख जप करे। फिर प्रत्यक्ष दर्शन के लिए सत्तर हजार जप करे। केले के पत्ते पर पायस (खीर) और घी-शक्कर का भोजन करे। एकान्त स्थान में आलस्य-रहित होकर जप करे। गन्धर्व-वेश धारण करे। पायस के दो भाग करके उसे ग्रहण करे। उसकी विधि यह है कि एक केले के पत्ते पर 'म्रीं' लिखे। प्रथम सप्तक (सात हजार जप का पुरश्चरण) सम्पन्न होने पर शान्ति होती है। द्वितीय सप्तक के होने पर प्रतिमा की आभा स्वर्ण-जैसी होती है और तृतीय सप्तक के पूर्ण होने पर देवी साक्षात् होकर पायस को खाती हैं और साधक के अभीष्ट वर को प्रदान करती हैं। वे साधक के साथ अहर्निश रहने लगती हैं। वे सागर, सुमेरु पर्वत, पाताल, इन्द्र-लोक, श्री शैल आदि दूरस्थ

स्थानों से अलभ्य वस्तुओं को आकृष्ट करती हैं। नदी, पुरी और रत्नों को क्षण भर में आकर्षित कर लेती हैं। रहस्य—गोपनीय बातों को, चाहे वे शासक की हों या शत्रु की, साधक को बता देती हैं। ऐसी त्रैलोक्याकर्षणी विद्या जिस किसी को न देना चाहिए।

'वटुक ! इमां गृहाण त्वं सिद्धिदो मेऽस्तु सर्वदा'—

यह साधन का मन्त्र-भेद है, जो संक्षेप में कहा गया है।

पन्द्रहवाँ पटल : मधुमती-सिद्धि की विधि

श्री देवी ने कहा—मैं अन्य मन्त्रों का साधन सुनना चाहती हूँ।

श्री शिव ने कहा—(१) आदि-बीज 'म्रीं' से एकाक्षरी विद्या (मन्त्र) बनती है। (२) 'ठ-युग्म' अर्थात् 'ठः ठः' जोड़ने से तीन अक्षर की विद्या 'म्रीं ठः ठः' होती है। (३) 'ठः ठः' को हटाकर 'स्वाहा' जोड़ने से दूसरी त्र्यक्षरी विद्या 'म्रीं स्वाहा' द्वारा कामदेव ने उपासना की। इसी प्रकार अन्य मन्त्र निम्न प्रकार हैं—

४ पञ्चाक्षरी—म्रीं मधुमति ! (पञ्चार्णा)
५ सप्ताक्षरी—म्रीं मधुमति ! ठः ठः। (मुनि-प्रिया)
६ द्वितीय सप्ताक्षरी—म्रीं मधुमति ! स्वाहा। (ऋषि-पूजिता)
७ षडक्षरी—मधुमति ! ठः ठः। (सकलार्थदा)
८ द्वितीय षडक्षरी—मधुमति !स्वाहा। (सर्वाकर्षण-कारिणी)
९ दशाक्षरी—म्रीं स्थावर-जङ्गमाकर्षणी। (विश्व-रूपिणी)
१० एकादशाक्षरी—स्थावर-जङ्गमाकर्षणी ठः ठः। (रुद्रार्णा)
११ विद्याद्या—स्थावर-जङ्गमाकर्षणी स्वाहा।
१२ महाविद्या—म्रीं स्थावर-जङ्गमाकर्षणी मधुमती ठः ठः।
१३ सिद्ध-विद्या—म्रीं स्थावर-जङ्गमाकर्षणी स्वाहा।
१४ परा कला—म्रीं मधुमति !स्थावर-जङ्गमाकर्षणी।
१५ परा—म्रीं मधुमति !स्थावर-जङ्गमाकर्षणी ठः ठः।
१६ परा—म्रीं मधुमति !स्थावर-जङ्गमाकर्षणी स्वाहा।
१७ परा—म्रीं मधुमति !स्थावर-जङ्गमाकर्षणी ठः ठः स्वाहा।
१८ विद्यान्या—म्रीं ठः ठः स्वाहा।
१९ सर्वार्थदा—मधुमति !ठः ठः स्वाहा।
२० सर्वाङ्ग-सुन्दरी—म्रीं स्थावर-जङ्गमाकर्षणी ठः ठः स्वाहा।
२१ परा—मधुमति !स्थावर-जङ्गमाकर्षणी ठः ठः।

२२ परा—मधुमति ! स्थावर-जङ्गमाकर्षणी ठः ठः स्वाहा।
२३ शिवसुन्दरी—मधुमति ! स्थावर-जङ्गमाकर्षणी स्वाहा।

इस प्रकार मूल-मन्त्र को लेकर २४ भेदवाली परमा कला कही गई है। बाला, मधुमती और सुन्दरी के मन्त्र भिन्न हैं। निधि-सिद्धि के तीन भेद कहे हैं। इस प्रकार त्रैलोक्याकर्षणो परा-विद्या के तीस भेद कहे हैं।

निर्जन केले के वन में रात्रि के प्रारम्भ में जाये। शुभ लग्न, शुभ दिन में कामनानुसार सङ्कल्प करे। यथा—

अष्टादशाक्षरस्यास्य महा-मधुमती-मनोः मन्त्र-सिद्ध्यर्थं अद्य-प्रभृति एक-विंशति-दिवसान्तं जप-रूपं पुरश्चरणमहं करिष्ये।

पहले दोनों षडङ्ग (करन्यास, अङ्गन्यास) करके ध्यान करे और पूजन करे। फिर गो-दुग्ध की खीर बनाकर उसका आधा भाग केले के पत्ते पर रखे और निम्न मन्त्र से उसे निवेदित करे—

स्त्रीं मधुमत्यै स्वाहा

फिर आचमन कराकर, ताम्बूल देकर प्रणाम करे और शेषार्द्ध खीर को अलग पत्ते पर रख कर स्वयं खाये। रक्त-पुष्पमाला, दिव्य वस्त्रादि से गन्धर्व वेष धारण कर प्रतिदिन तीन हजार, तीन सौ चौंतीस जप करता हुआ इक्कीस दिन तक जप-पुरश्चरण करे। उसे देवता वरदायिनी होती है। बटुक की उपासना साथ-साथ करने से सिद्धि मिलती है, अन्यथा नहीं। श्री तारा और कालिका के उपासक इस विद्या को सिद्धि करके सिद्धि पाते हैं, अन्यथा नहीं। जो जो कामना वे करते हैं, उन्हें क्षण मात्र में यह पूरी करती है। यह परा-विद्या सबका आकर्षण करनेवाली सब कुछ देती है। कुबेर, शङ्कर, विष्णु, पार्वती, अरुन्धती और दश-महा-विद्याओं को यह तुरन्त आकृष्ट करती है। समुद्रों, द्वीपों, सिद्ध-यक्ष, महासर्पों और न सुनी हुई अकल्पनीय वस्तुओं को भी क्षण मात्र में यह आकर्षित करती है। किन्नरों, राक्षसों, निधियों को, सुमेरु और कैलास को यह तुरन्त आकृष्ट करती है। त्रिकाल ज्ञान को और सब कुछ यह साधक को बता देती है और सावधान करती है। यह त्रैलोक्याकर्षणी विद्या परम गोपनीय है।